

Research Article

मुग़लकालीन चित्रण में नारी की भूमिका

अनीता राठी¹ शालिनी²¹प्राचार्या, इस्माइल नेशनल महिला (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत²असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारतDOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202621>

I N F O

Corresponding Author:

शालिनी, इतिहास विभाग चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

E-mail Id:

drshalini389@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0009-9286-970X>

How to cite this article:

अनीता राठी, शालिनी, मुग़लकालीन चित्रण में नारी की भूमिका, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(3&4): 26-31.

Date of Submission: 2026-05-20

Date of Acceptance: 2026-06-28

A B S T R A C T

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में चित्रकला का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके अंतर्गत सदैव ही नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण किया जाता रहा है। मुग़ल चित्रकला में भी नारी चित्रण हुआ है, परंतु अपेक्षाकृत कम। मुग़ल कलाकारों ने स्त्री आकृतियों को समुचित ढंग से संयोजित कर विभिन्न वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया, जिसका उदाहरण अनेकों मुग़ल चित्रों में देखा जा सकता है।

मुख्य शब्द: मुग़ल चित्रकला में नारी अंकन, मुग़ल चित्रों में नारी संयोजन, मुग़ल चित्रों में वस्त्राभूषण, मुग़लकालीन प्रमुख स्त्री चित्र

प्रस्तावना

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में चित्रकला एक अमूल्य धरोहर के रूप में विद्यमान है। भारतीय चित्रकला में नारी रूपांकन से चित्रों में सम्पूर्णता का तत्व भी परिलक्षित होता है। चाहे विश्वविख्यात अजन्ता-एलोरा के गुहाचित्रों की नारी का सौन्दर्य हो या मुग़लकालीन चित्रों में 'नूरजहाँ' का, राजस्थानी चित्रों की 'रागिनी' हो या पहाड़ी शैली की 'बनी-ठनी'... सबर्त ही नारी सौन्दर्य और शक्ति के आदर्श रूप प्रतिबिम्बित होते हैं। वास्तव में भारतीय चित्रकला में 'स्त्री चित्रण' एक विशेष मायने रखता है।

मध्यकाल में मुग़ल शासकों के भारत में स्थापित होने से पूर्व ही भारत में चित्रकला का बहुमुखी विकास हो चुका था। कलाप्रेमी मुग़ल शासकों ने (इस्लामी रुढ़ियों को न मानते हुए) चित्रकला को स्वतंत्र भाव से अपनाया और चित्रकारों को मानवाकृतियों के अंकन हेतु पर्याप्त प्रोत्साहन और संरक्षण दिया। इसके फलस्वरूप मुग़ल चित्रकला एक 'उत्कृष्ट एवं परिष्कृत चित्र शैली' के रूप में भारतीय संस्कृति का अहम हिस्सा बनी।

मुग़ल चित्रकला में नारी अंकन

सभी मुग़ल शासकों ने अपने-अपने स्तर पर चित्रकला को प्रेम और प्रोत्साहन दिया, परन्तु अकबर से लेकर शाहजहाँ तक के काल में मुग़ल चित्रकला का पूर्ण रूपेण विकास हुआ। मुग़ल शासकों ने अनेकानेक विषयों पर चित्रण कार्य कराया। जिनमें मानवाकृतियों का अंकन मुख्यतः व्यक्ति-चित्रों के अंतर्गत किया गया है। मुग़ल कालीन व्यक्ति चित्रों में शबीहों (पोट्रेट्स), दरबारी दृश्यों, आमोद-प्रमोद, उत्सवों, रनिवास (हरम), शिकार, युद्धों, जुलूस तथा एकान्तिक आदि दृश्यों के चित्र आते हैं।

मुग़ल शासकों ने व्यक्ति चित्रों को इतिहास के स्रोत के रूप में स्वीकार कर महत्व दिया। इसे ध्यान में रखते हुए मुग़ल चित्रकला में यथावत् एवं वास्तविक व्यक्ति चित्रण पर विशेष बल दिया गया। यद्यपि 'अकबर' के काल में बड़ी संख्या में व्यक्ति चित्रों अंकन हुआ, परन्तु सर्वाधिक व्यक्ति चित्र 'जहाँगीर' के काल में बने। कला मर्मज्ञों का मत है कि मुग़ल चित्रशैली का चरमोत्कर्ष जहाँगीर कालीन व्यक्ति चित्रों में ही उपलब्ध होता है। मुग़ल दरबार में व्यक्ति चित्रण में दक्ष कलाकारों में मीर सैय्यद अली, अब्दुस्समद, अकारिजा, बिशनदास तथा फारूखबेग आदि थे। मुग़ल चित्रों में महत्वपूर्ण एवं शाही व्यक्तियों के हाथों में कहीं-कहीं फूल, पक्षी या अन्य सामान देकर उनकी रुचि का संकेत दिया गया है। मुग़लकालीन चित्रकला के स्त्री पात्रों के अंतर्गत मुख्यतः बेगमों व राजकुमारियों सहित शाही व उच्च वर्गीय महिलाओं के साथ-साथ यवन सुन्दरियों, गणिकाओं, सेविकाओं तथा उत्सवों आदि में नृत्य करती महिलाओं आदि का चित्रण किया गया है।

प्रारम्भिक मुग़ल चित्रकला में पुरुषों की तुलना में स्त्री आकृतियाँ कम ही दिखाई देती हैं जिसका प्रमुख कारण उस समय के सामाजिक बंधन थे। जिसके चलते स्त्रियों में पर्दा प्रथा का प्रचलन और उनका घर की चाहरदीवारी तक सीमित होना था। अकबर के काल में जीवन के प्रत्येक पक्ष पर चित्रण कार्य हुआ परन्तु उसके काल में भी स्त्री आकृतियों का अभाव दिखाई देता है। तत्कालीन रीति-रिवाजों के कारण स्त्रियों के सदैव पर्दे में रहने से उनका स्वाभाविक चित्रण नहीं मिलता, अतः इस संदर्भ में 'इतिहासकारों' में मतभेद है कि मुग़ल चित्रों में स्त्रियों का वास्तविक चित्रण हुआ है या कलाकार ने अपनी कल्पना का प्रयोग कर 'स्त्री चित्रण' किया। यह सत्य है कि मुग़ल काल में पर्दाप्रथा विद्यमान थी। अतः इस बात की संभावना अधिक है कि स्त्रियों के वास्तविक चित्रण में कलाकार ने कल्पना का प्रयोग किया है। **पर्सि ब्राउन** और **मनूची** इसी बात का समर्थन करते हैं। **पर्सि ब्राउन** के अनुसार—इस प्रकार के चित्रों की वास्तविकता पर सन्देह है क्योंकि ये चित्र कलाकार की कल्पना शक्ति की उपज हैं।¹ **रिचर्ड वैसली** ने भी लिखा है— "जहाँगीर काल में चित्रकारों को 'नूरजहाँ' तथा अन्य उच्च श्रेणी की महिलाओं का चेहरा देखने की अनुमति नहीं थी।² जबकि **अशोक कुमार दास** का मत है— "जहाँगीर काल में चित्रकारों को स्त्रियों के व्यक्ति चित्र बनाने के लिए 'जनान खाने' (हरम) में प्रवेश की अनुमति थी।"³ जहाँ तक जहाँगीर काल की बात है तो उसके शासन काल में महिलायें भी चित्रकारी किया करती थी तथा उसके काल की कुछ प्रमुख चित्रकर्तियों के नामों का भी उल्लेख मिलता है। जिनमें **साइफ़ाबानो**, **रुक़इय्याबानो** तथा **नादिराबानो** प्रमुख थी।⁴ इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि इन महिला चित्रकर्तियों को रनिवास (हरम) की बेगमों तथा शहजादियों आदि की शबीहें तैयार करने हेतु नियुक्त किया गया होगा। यही नहीं 'भारत कला भवन, वाराणसी' से प्राप्त एक चित्र में एक 'स्त्री चित्रकार' एक अन्य स्त्री का शबीह चित्र अंकित कर रही है।⁵ स्पष्ट है कि जहाँगीर के समय में निश्चित रूप से 'स्त्री चित्र बनवाये गये, तथा उसके समय उसकी सुन्दर बेगम **नूरजहाँ** की भी 'शबीहें' (पोट्रेट्स) तैयार की गई। इसी तरह

अकबर के काल में भी उसकी माँ 'हमीदाबानो बेगम' का 'शबीह चित्र' तैयार किया गया।⁶ अतः यह कहा जा सकता है कि मुगल स्त्री चित्रण में जितना अधिक कल्पना का प्रयोग बताया जाता है, संभवतः उतना प्रयोग नहीं किया गया होगा, क्योंकि महिला चित्रकर्त्रियों को तो रनिवास में प्रवेश की निश्चित रूप से अनुमति होगी।

मुगल चित्रों में नारी आकृति संयोजन

प्रत्येक देशकाल में कलागत अंकन हेतु कलाकारों के निश्चित 'देह प्रमाण' होते हैं। सामान्यतः मुखाकृति को ही एक इकाई मानकर उसके अनुपात में सम्पूर्ण देह की लम्बाई-चौड़ाई का निरूपण किया जाता है। मुगलकाल में भी चित्रकारों ने 'नारी रूप विन्यास' में विभिन्न देह प्रमाणों का अनुसरण किया है।⁷ मुगल चित्रशैली में 'स्त्री आकृतियों का संयोजन' ईरानी तथा भारतीय शैली के अनुसार किया गया है। मुगल चित्रकारों ने प्रायः स्त्रियों को त्रिकोणीय अवस्था में खड़ा हुआ चित्रित किया है। अकबर कालीन कुछ चित्रों के भाव प्रदर्शन बहुत सशक्त है। भाव तथा चेहरे की अभिव्यंजना भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र में बताये नियमों के अनुसार ही है।⁸

देह—मुगल चित्रों में स्त्री आकृति को पुरुषों की आकृतियों की तुलना में लगभग डेढ़ गुना छोटा बनाया गया है तथा स्त्री आकृतियों के चेहरे अधिकांशतः एक चश्म, डेढ़ चश्म तथा कहीं-कहीं सवा-चश्म भी बनाये गये हैं।

केशविन्यास—मुगल चित्रों में नारियों की केशराशि से निःसृत एक लट ग्रीवा तक दिखाई गई है। चित्रों में कटि तक लम्बी चोटी, विभिन्न जूड़े, अधखुले एवं मध्यवृत्त में विभाजित तथा पूरे खुले केशों का अंकन स्त्री सौन्दर्य में वृद्धि करता दिखाई देता है।

ललाट—चित्रों में सभी आकृतियों का माथा चौड़ा, मध्यम तथा कहीं-कहीं केशों से आभासित दिखाई देता है। मुगल स्त्री के माथे पर किसी प्रकार की बिन्दी अथवा तिलक का अंकन नहीं मिलता।

भू एवं नेत्र—मुगल चित्रों में स्त्रियों की भौहें धनुषाकार, अर्ध चन्द्राकार, किनारों से झुकी-सीधी रेखा आदि में चित्रित की गई हैं। स्त्रियों के नेत्र अधिकांश झुके व अधखुले दिखाये गये हैं। नेत्रों की आकृति मीनाकार अथवा कमल पत्र के समान है।

नासिका—मुगल स्त्रियों की आकृति के चेहरे पर नासिका को लम्बा पतला दिखाया गया है। जिसका अग्रभाग प्रायः नुकीला अंकित किया गया है।

अधरोष्ठ—स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के अधरोष्ठ अंकित किये गये हैं जिनमें अधिकांश बंद अवस्था में तथा किनारों की ओर नीचे झुके हुए हैं। अधरों के मध्य निहित उनकी मोटाई एवं गहराई उन्हें विभाजित करने वाली 'मध्य रेखा' द्वारा व्यक्त की गई है।

कपोल (गाल)—स्त्रियों के कपोल (गाल) स्निग्ध एवं उभरे हुए चित्रित किए गए हैं जिनमें 'परदाज' (बिन्दुओं) के माध्यम से उभार एवं मांसलता व्यक्त करने का सफल प्रयोग किया गया है।

चिबुक—स्त्रियों की चिबुक (ठोड़ी) प्रायः पतली व नुकीली अथवा आम की गुठली के समान चित्रित की गई है। चिबुक की रेखा ग्रीवा के पास आकर कुछ भारी दिखाई गई है, परंतु वह दोहरी चिबुक की श्रेणी में नहीं आती।

ग्रीवा—स्त्रियों की ग्रीवा पतली तथा छोटे आकार की अथवा कुछ सुराहीनुमा अंकित की गई है।

बांह तथा अंगुलियाँ—चित्रों में स्त्रियों की भुजाओं (बाँह) व अंगुलियों को कोमल दिखाया गया है तथा उनकी कलाइयों में चूड़ियाँ व कड़े आदि आभूषण दिखाये गये हैं।

उरोज—मुगल चित्रों में स्त्री आकृतियों को हिन्दू वेशभूषा (लहंगा व चोली आदि) में अंकित कर उरोज का आकार स्पष्ट किया गया है।

कटि व पाँव—स्त्रियों की कटि (कमर) को कोमल रूप में मध्यमक्षीण तथा कहीं—कहीं अति क्षीण भी अंकित किया गया है। उनके पाँवों को छोटा, कोमल तथा अधिकांश जूतियों से ढका दिखाया गया है।

स्पष्ट है कि मुगल कालीन चित्रों में स्त्री आकृतियों को मानवाकृति देह प्रमाण के आदर्शों का पालन यथार्थता के साथ किया गया है तथा स्त्री आकृतियाँ प्राकृतिक देह रचना के निकट हैं। मुगल चित्रों में स्त्री की सुन्दरता देखने योग्य है।

स्त्रियों के वस्त्राभूषण

मुगल चित्रों में स्त्रियों को उनके पद व गरिमा के अनुसार विभिन्न प्रकार के वस्त्राभूषणों में अंकित किया गया है। आरम्भिक मुगल शैली के चित्रों पर सर्वाधिक पर्शियन (ईरानी) प्रभाव था। बाबर तथा हुमायूँ कालीन स्त्रियाँ अपने मूल देश ईरान और 'खुरासान' शैली के वस्त्राभूषण धारण किया करती थी।⁹ राजसी स्त्रियों को भी विभिन्न प्रकार के भव्य आकर्षक एवं कीमती परिधानों में चित्रित किया गया है। मुगल स्त्री आकृतियों के पहनावे में भारतीय वेशभूषा लहंगा, चोली व झीना आंचल के अतिरिक्त सामान्यतः लम्बे आस्तीनदार कुर्तों, जामों, पायजामों तथा ओढ़नियों व जूतियों को दिखाया गया है।¹⁰

ओढ़नी—मुगल चित्रों में स्त्रियों को अधिकांशतः 'ओढ़नी (दुपट्टो) में दिखाया गया है जो कि मुगलकाल में हिन्दू तथा मुस्लिम नारियों की वेशभूषा का आवश्यक अंग रही हैं।¹¹

जामा—आरम्भिक मुगल चित्रों में मुस्लिम शहजादियों तथा अभिजात्य वर्ग की महिलाओं को अपारदर्शी जामों में चित्रित किया गया है जो कि कमर से चुस्त तथा नीचे से घेरदार तथा पूरी बाहों वाला परिधान है।

लहंगा—चित्रों में स्त्रियों को विभिन्न आकर्षक रंगों वाले सुन्दर व भव्य लहंगों में भी दिखाया गया है जो कि एडी तक की लम्बाई के होते थे। कई जगह लहंगों के नीचे की तरफ किनारी पर पट्टीदार सुन्दर आलेखन भी अलंकृत है।¹²

शिरोवस्त्र—स्त्रियों के शिरोवस्त्र के रूप में सिर पर टोपी के साथ बंधी हुई ओढ़नी तथा कहीं—कहीं पर मुकुट को भी चित्रित किया गया है।

आभूषण—मुगल चित्रों में स्त्रियों को सिर से लेकर पैर तक स्वर्ण, चांदी, मोती, मणियों तथा रत्नों से युक्त अनेकों प्रकार के भव्य एवं कीमती आभूषणों में अलंकृत कर उनके रूप सौंदर्य में वृद्धि की गई है। उनके आभूषणों में मोतियों की मालायें बेंदी, बाजूबंद दस्तबन्द, कड़े, झुमके तथा पेटियाँ आदि बनाई गई हैं।

शिरोभूषण—मुगल स्त्रियों के शीर्ष (सिर) पर शीशफूल, चन्द्रमणि, माँगटीका, बेंदी तथा झूमर आदि का अंकन किया गया है।

कर्णाभूषण—'तुजुके जहाँगीरी' में कर्णफूल, पीपल पत्ती, दुरबच्छ, बाली, मोर तथा भंवर आदि सात प्रकार के कानों के आभूषणों का उल्लेख मिलता है।¹⁴ मुगल स्त्रियों को उपरोक्त अनेक प्रकार के कर्णाभूषणों में दिखाया गया है।

नासिका के आभूषण—मुगल स्त्रियों को नासिका के आभूषण के रूप में बड़ी तथा मोतियुक्त नथ को दिखाया गया है परंतु इसका अंकन कम मिलता है।

कण्ठाभूषण—मुगल चित्रों में कलाकारों ने प्राचीन काल से चली आ रही कण्ठाभूषण की परम्परा को अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। स्त्रियों को गले में 'लॉकेट' मोतियों तथा स्वर्ण गोलियों युक्त लड़ियों वाली तथा नाभि तक की लम्बाई वाली मालाओं से अलंकृत दिखाया गया है।

पांव के आभूषण—स्त्रियों के पांवों को अधिकांश—मोतियों से अलंकृत दिखाया गया है तथा कहीं—कहीं स्वर्ण व धातु की पायजेबों का भी चित्रण है।

हाथ के आभूषण—मुगल स्त्रियों की भुजाओं को बाजूबंद, कलाईयों को चूड़ियों व कड़े में तथा अंगुलियों में अंगूठियों को दिखाया गया है। कई स्थानों पर हथफूलों का भी चित्रण है।

जूतियाँ—स्त्री आकृतियों के पावों में समतल, नुकीली एड़ी की तथा कहीं—कहीं आगे से मुड़ी हुई विभिन्न रंगों की जूतियों को दिखाया गया है। शाही संभ्रांत महिलाओं की जूतियाँ जड़ाऊ, बारीक कशीदाकारी वाली तथा सुनहरे तारों के काम से सुसज्जित चित्रित की गई हैं।

स्पष्ट है कि मुगल चित्रों में स्त्री आकृतियों को बहुत ही आकर्षक एवं एक से एक डिजाइन के विविध प्रकार के वस्त्राभूषणों में चित्रित किया गया है जो निश्चित ही स्त्री आकृतियों के रूप सौंदर्य को और भी भव्य बनाते हैं।

मुगलकालीन प्रमुख स्त्री चित्र—मुगल कालीन चित्रों में कलाकारों ने 'स्त्री चित्रण' के अंतर्गत नारी के आदर्श एवं सौन्दर्यमयी रूप को सामने रखकर चित्रण किया है। ऐसे अनेकों चित्रों में स्त्री आकृतियों का अंकन हुआ है। उनमें से प्रमुख निम्न है—

मुगल कालीन शाही महिलाओं के स्त्री चित्रण के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक 'महारानी जोधाबाई का व्यक्ति चित्र' है। इसमें महारानी की त्रिकोणीय अवस्था में खड़े हुए तथा चेहरे को एक—चश्म अंकित किया गया है। जोधाबाई को हल्के आभूषणों, पारदर्शी दुपट्टे तथा अलंकृत वस्त्रों में चित्रित किया गया है। समतल पृष्ठभूमि वाले इस अण्डाकार चित्र का अलंकृत हाशिया चित्र का और भी भव्य और आकर्षक बनाता है। शाहजहाँ कालीन चित्रकला की खूबियों को दर्शाता सौम्य रंग योजना वाला यह चित्र वर्तमान में कलकत्ता के मेमोरियल हॉल में संग्रहित है। यह किस हद तक व्यक्ति चित्रण की श्रेणी में आता है यह कहना कठिन है।¹⁵ परंतु यह चित्र देखते ही कहा जा सकता है कि संभ्रांत परिवार की महिला का शोभायुक्त चित्र है।

इसी प्रकार अकबर के समय उसकी माँ 'हमीदाबानो बेगम' तथा बाबरनामा में 'माहमअनगा' के शबीह चित्र तैयार किये गये। जहाँगीर काल में उसकी सुंदर बेगम 'नूरजहाँ' की भी अनेकों शबीहें बनवाई गईं। शहजादा दाराशिकोह की पत्नी 'नादिराबानो बेगम' का शबीह चित्र भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त अन्य मुगल चित्रों में भारी नारी आकृति का अंकन हुआ है—

1. बाबरनामा के 'हुमायूँ का जन्म' नामक प्रमुख चित्र में हर्षोल्लास के वातावरण में 'स्त्रियाँ पुरुषों के साथ हाथ में तलवारें लेकर नाचती दिख रही हैं।
2. अकबरनामा के प्रमुख चित्र 'राजकुमार सलीम का जन्म' में राजकुमार सलीम की माता तथा परिचारिकाओं के साथ ही नृत्य करती अनेक महिलाओं का चित्रण है।
3. अकबरनामा के ही 'विवाह के समय' नामक प्रसिद्ध चित्र में संगीत समारोह में 'तुर्की शैली में एक स्त्री' का चित्रण किया गया है।

4. अकबर कालीन स्त्री चित्रों में ही 'मुगल मैडोना' नामक ईरानी प्रभाव युक्त चित्र भी है।
5. अकबरनामा के ही एक अन्य चित्र में 'नर्तकी' को भारतीय शैली में दिखाया गया है।
6. जहाँगीर कालीन चित्र 'जहाँगीर का राजतिलक' में स्त्रियों को समूह में पुरुषों के साथ चित्रित किया गया है।
7. इसी प्रकार 'वाराणसी कला भवन' में संग्रहित जहाँगीर काल का 'एक सुन्दरी' नामक चित्र जहाँगीर कालीन चित्रकला की विशेषताओं से परिपूर्ण चित्र है। इस चित्र में एक सुन्दरी शिवार्चन के लिये जाती दिखाई गई है। उसके अंग-प्रत्यंग तथा वस्त्राभूषण उसके प्राकृत सौन्दर्य को अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र 'मुगलकालीन चित्रण में नारी की भूमिका की विवेचना' के निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मुगल कालीन चित्रों में सीमित ही सही परंतु स्त्री आकृतियों का निश्चित ही चित्रण हुआ है। जिसके अंतर्गत शाही तथा अन्य वर्ग की महिलाओं के चित्र मिलते हैं। मुगल चित्रों में स्त्री आकृतियों के संयोजन हेतु चित्रकला के मानदण्डों के आधार पर उत्कृष्ट एवं आदर्श स्त्री चित्रों की रचना की गई। शाही तथा अन्य स्त्रियों की आकृतियों को तत्कालीन प्रचलित विविध प्रकार के आकर्षक भव्य एवं कीमती वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर स्त्री के आदर्श एवं सौन्दर्यमयी रूप को मुगल चित्रों में स्थान दिया गया। वर्तमान में प्राप्त शाही मुगल महिलाओं के चित्रों से स्पष्ट होता है कि मुगल काल में पर्दाप्रथा जैसे सामाजिक बंधनों के बाद भी मुगल शासकों ने उदारता का परिचय देते हुए स्त्रियों को मुगल चित्रों में एक अलग स्थान दिया। यही नहीं विभिन्न हर्षोल्लास व उत्सवों आदि के चित्रों में पुरुषों संग नृत्य करती स्त्रियों के चित्रण से भी मुगल शासकों की उदारता का पता चलता है।

संदर्भ सूची

1. ब्राउन, पर्सी, "इण्डियन पेंटिंग अण्डर द मुगल्स", ऑक्सफोर्ड, 1924 नई दिल्ली, पृ०सं० 157
2. सर रिचर्ड वैसली, "इण्डियन आर्ट", पृ०सं० 130
3. दास, अशोक कुमार, "मुगल पेंटिंग ड्यूरिंग जहाँगीर टाइम", कोलकाता, 1978, पृ०सं० 2
4. प्रताप, रीता, "भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास", हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (राजस्थान), पृ०सं० 147
5. प्रताप, रीता, "भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला का इतिहास", हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (राजस्थान), पृ०सं० 147
6. वर्मा, अविनाश बहादुर, "भारतीय चित्रकला का इतिहास", बरेली, 1999, पृ०सं० 150
7. जे०बी०एस०, विल्सन, "मुगल पेंटिंग फ़ैबर एण्ड फ़ैबर"
8. मोतीचन्द्र, "टेक्नीक ऑफ मुगल पेंटिंग, पृ०सं० 63
9. डपौतए त्मींए ष्वउमद पद उनहींस प्दकपंष चण 119
10. वर्मा, अविनाश बहादुर, "भारतीय चित्रकला का इतिहास", बरेली, 1999, पृ०सं० 166
11. शेरवानी, एच०के०, "कल्चरल सिन्थेसिस, इन मिडिबल इण्डिया ऑफ इण्डियन हिस्ट्री" खण्ड-22, भाग-1, पृ०सं० 100
12. मीरा की शब्दावली, सूरसागर (13-64), लाल लहंगा (606), पृ०सं० 780
13. तुजुके जहाँगीरी
14. वर्मा, अविनाश बहादुर, "भारतीय चित्रकला का इतिहास", बरेली, 1999, पृ०सं० 166
15. मनुची, "स्टोरिया द मोगेर", अनुवाद-इरविन, पृ०सं० 328-331